Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

# महान संत कवि कबीर के काव्य में परिलक्षित सामाजिक यथार्थ

राखी पचौरी
शोधार्थिनी– हिन्दी विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा

**Article Info**
Volume 6, Issue 2
Page Number : 80-84

**Publication Issue :**
March-April-2023

**Article History**
Accepted : 01 April 2023
Published : 10 April 2023

शोध सार – 1398 ईसवी में काशी में जन्मे महान संत कबीर दास जी ऐसे कवि और समाज सुधारक थे कि उनके जैसा आज तक न कोई हुआ ना होगा। उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव मूल्यों की रक्षा एवं मानव सेवा में व्यतीत किया। कबीर दास जी जिस दुरावस्था के काल में पैदा हुए वह समय घोर अंधकार और निराशा से भरा हुआ था। अनेक समस्याओं ने भारत देश में अपनी जड़े जमा ली थीं। समाजिक रूढ़ियाँ, छुआ–छूत, धार्मिक पाखंड, हिंसा, साम्प्रदायिकता, वर्ण भेद, बाहरी आडंबर, हिन्दू मुस्लिम झगड़ें आदि बुराईयों ने अपने पैर पसार लिए थे। जन्म स्थान काशी का धर्मांध वातावरण, पारिवारिक जीवन से असंतुष्टि, जाति विद्रोह, जुलाहा व्यवसाय, पर्यटनशीलता, अशिक्षा और गुरू रामानन्द से प्राप्त दीक्षा आदि से कबीर का व्यक्तित्व निर्मित हुआ। कबीर दास जी ने अपने विलक्षण, साहसी और निर्भयतापूर्ण दृष्टिकोंण द्वारा समाज के यथार्थ को उद्घाटित ही नहीं किया अपितु समाज सुधार की क्रांतिकारी भावना को भी जागृत किया।

मुख्य शब्द:– क्रान्तिकारी, धर्मांध, दृष्टिकोंण, सत्कर्म, नरर्थक, समन्वय, दृष्टिगोचर, साम्प्रदायिकता, जर्जर आदि।

समाज में फैली बुराइयों, रूढ़ियों, परंपराओं, बाहरी आडंबरों, और ढकोसलों के कारण खोखले होते समाज के यथार्थ को कबीर दास जी ने अपने जीवन में अनुभव किया। जातिगत, धर्मगत, वर्गभेद, साम्प्रदायिकता आदि कटुताओं से कबीर दास जी जीवन पर्यंत संघर्ष करते रहे और अनेक सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हुए पूर्ण निर्भीकता, साहस एवं मौलिकता से अनुभूत यथार्थ को अपने काव्य के माध्यम से उजागर किया तथा समाज में व्याप्त बुराइयों पर करारी चोट की और मानव धर्म, सद्भाव, सौहार्द तथा आपसी एकता की प्रेरणा भी दी।

**जाति-पाति का विरोध:-** कबीर दास जी ने समाज में फैली जाति–पाति और ऊँच–नीच की भवना का विरोध किया–

**"तुम कत ब्राहम्ण हम कत सूद,**
**हम कत लौहू तुम कत दूध**
**जो तुम बाभन-बाभनि जाया**
**आन घाट काहें नहिं आया''**[1]

**कबीर दास जी कहते हैं कि -** यदि तुम ब्राह्मण हम शूद्रों से ऊँचे हो तो हमारी नसों में लहू और तुम्हारी नसों में दूध भरा है क्या? यदि ऐसा नहीं है तो हम अलग कैसे हो सकते हैं? वास्तव में यदि ब्राहम्ण शूद्रों से श्रेष्ठ है तो धरती पर किसी और मार्ग से क्यों नहीं आया, क्यों हमारे समान ही जन्म लिया?

**"जौ तूँ तुरक-तुरकनी जाया।**
**तौ भीतर खतना क्यों न कराया''**[2]

**मुस्लिम सम्प्रदाय से भी कबीर प्रश्न करते हैं कि -** तू मुस्लिम होने पर अभिमान करता है और कहता है कि तुझे अल्लाह ने मुसलमान बनाया है तो माँ के पेट में ही तेरा खतना क्यों नहीं हुआ। इस प्रकार कबीर ने हिन्दू और मुस्लिमों के अभिमान को तोड़ा है।

**धार्मिक पाखंड का विरोध:-** संत कबीर ने धार्मिक पाखंडों का प्रचार करने वालों को फटकार लगाई है–

"माला तिलक लगाई कै, भक्ति न आई हाथ,
दाड़ी मूंछ मुराय कै, चले दुनी के साथ

**Copyright: ©** the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

दाड़ी मूंछ मुराय कै, हुहा घोटम घोट,
मन को क्यों नहीं मूरिये, जामै भरिया खोट''[3]

"कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई बनाइ।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।।''[4]

कबीर दास जी ने उन लोगों पर व्यंग किया है जो समाज में धार्मिक पाखंड फैलाते हैं, लोगों को भ्रमित करते है– वे कहते हैं कि माथे पर तिलक, हाथ में माला और दाड़ी मूंछ मुढाने से कोई भक्त नहीं बन जाता और ना ही जोर – जोर से चिल्लाने वालों को खुदा मिलता है सच्ची भक्ति अपने मन के खोट को बाहर निकालने और मन को शुद्ध करने से होती है और खुदा की प्राप्ति सत्कर्मों से होती है। ऊँची आवाज में चिल्लाने से नहीं।

**साम्प्रदायिकता का विरोध:-** आपस में एक दूसरे के धर्म को नीचा दिखाकर अपने–अपने धर्म को श्रेष्ठ बताने वाले लोगों के विरोध में कबीर कहते हैं कि।

**"साधो, देखो जग बौराना।**
**साँची कहो तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना।**
**हिन्दू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना।**
**आपस में दोउ लड़े मरतु हैं मरम कोई नहिं जाना।''[5]**

देखो साधु, यह सारी दुनिया कैसी बावली हो गई है, सब एक दूसरे के धर्म को नीचा दिखाना चाहते हैं। हिन्दु राम का नाम लेते हैं और मुस्लिम रहमान का, दोनो अपने–अपने धर्म को श्रेष्ठ बताकर आपस में झगड़ा करते हैं। सत्य की बात करने वाले का विरोध करते हैं और झूठ पर सब विश्वास करते हैं। मानव धर्म ही सत्य है इस मर्म को कोई नहीं पहचानता।

**हिंसा का विरोध:-** कबीर दास जी ने सदैव ही हिंसा का विरोध किया फिर चाहे हिंसा धर्म के नाम हो या जीभ के स्वाद के लिए।

**" दिन में रोजा रहत हैं, राति हनत हैं गाय।**
**यह तो खून वह बंदगी, कैसे खुशी खुदाय।।''[6]**

जो मुस्लिम समुदाय पूरे दिन रोजा रखकर धर्म की बात करता है वह रात में गाय की कुर्बानी देकर खुदा को प्रसन्न कर सकता है? हिंसा का परिणाम सदैव बुरा ही होता है।

**"बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल।**
**जे नर बकरी खात हैं, तिनकौ कौन हवाल।।''[7]**

जीवित रहने के लिए केवल पत्तियों को खाने वाली बकरी के पापकर्मों के कारण उसकी खाल खींची जाती है, तो जो मुनष्य बकरी खाते हैं उनकी दशा क्या होगी?

**निम्न वर्ग के पक्षकार:-** कबीर दास जी सदैव मानवता के पक्षधर रहे, उन्होने निम्न वर्ग के साथ पक्षपात करने वालों को सचेत किया है

**"दुर्बल को न सताइऐ, जाकी मोटी हाय।**
**मुई खाल की स्वाँस सों, सार भसम है जाय।।''[8]**

संत कबीर कहते हैं कि हमें असहाय लोगों की मदद करनी चाहिए। कभी भी कमजोर वर्ग को सताना नहीं चाहिए क्यों कि उनकी आह बहुत प्रभावी होती है जिससे व्यक्ति का विनाश निश्चित हो जाता है बिल्कुल वैसे ही जैसे निर्जीव खाल की स्वाँस मात्र से कठोर लोहा भी भष्म हो जाता है।

**आपसी सहयोगी की भावना:-** परस्पर सहयोग की भावना से ही आदर्श समाज का निर्माण होता है।

**"कबीर सोई पीर है, जों जाने पर पीर।**
**जो पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर।।''[9]**

कबीर दास जी कहते हैं कि सच्चा मानव वही है जो दूसरे की पीड़ा को समझे उसके प्रति सद्भावना दिखाए। जो मनुष्य दूसरे के दु:ख को नहीं समझते वे निष्ठुर होते हैं और मानव जाति के लिए निरर्थक होते हैं।

**गुरू का महत्व:-** जिस प्रकार प्रकाश के अभाव में व्यक्ति भटकता रहता है ठीक उसी प्रकार गुरू के ज्ञान के बिना व्यक्ति अज्ञानता के अंधेरे में राह भटक जाता है।

**"गुरू बिन ज्ञान न उपजै, गुरू बिन मिले न मोष।**
**गुरू बिन लखै न सत्य को, गुरू बिन मिटे न दोष।।"**[10]

गुरू के महत्व का वर्णन करते हुए कबीर कहते हैं कि संसार में व्याप्त बुराइयों की पहचान गुरू के ज्ञान द्वारा ही संभव है। गुरू के ज्ञान के बिना हम सत्य को नहीं पहचान पाते। समाज से बुराइयों, रूढियों और विशंगतियों का नाश तभी होगा जब मन के भीतर के दोष समाप्त होंगे और यह सब गुरू के मार्गदर्शन के बिना संभव नहीं है।

**लोक मंगल की भावना:-** कबीर दास जी मानव जीवन को संवारने की बात करते हैं। वे मानव को सत्य की ओर ले जाने के पक्षधर हैं वे प्राणी मात्र से प्रेम, दया और करुणा का भाव रखते हैं।

**"कबिरा खड़ा बाजार में, मांगे सबकी खैर।**
**न काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर।।"**[11]

उनकी दृष्टि में सभी प्राणी एक समान हैं। वे समस्त मानव जाति का हित चाहते हैं और मनुष्य को मूल्य परक जीवन जीने का संदेश देते हैं।

**एकता की भावना:-** कबीर दास जी की दृष्टि में पूरा विश्व एक कुटुम्ब के समान है, वे आदर्श मानव के जीवन के लिए उसके नैतिक गुणों पर बल देते हैं।

**"शीलवन्त सबसे बड़ा, सब रतनन की खान।**
**तीन लोक की संपदा, रही शील में आन।।"**[12]

मानव जीवन में विनम्रता को कबीर सबसे बड़ा गुण मानते हैं। जिसमें विनम्रता का गुण है, वह समाज में सम्मान पाता है क्यों कि विनम्रता ही एक मात्र ऐसा गुण है जिससे व्यक्ति में आपसी प्रेम और सौहार्द का भाव जाग्रत होता है, जिसके द्वारा सम्पूर्ण मानव जगत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

निष्कर्ष:- संत कबीर दास जी एक समाज सुधारक, सर्वधर्म समन्वयकारी, हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रचारक तथा मानव धर्म के प्रवर्तक के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं।

कबीर दास जी भले ही पढे-लिखे नहीं थे फिर भी वे वाणी के डिक्टेटर कहलाए। अपनी प्रखर वाणी से ही उन्होंने समाज को बुराइयों, कुरीतियों और विसंगतियों से निजात दिलाने का प्रयास किया तथा ऊँच-नीच, जाति-पाति, धार्मिक पांखंडों का विरोध कर एकता तथा समानता का संदेश दिया। कबीर का काव्य जन साधारण का काव्य है उनके सहित्य में समाज सुधार की भावना कूट-कूट कर भरी है, उनकी रचनाओं में सर्वधर्म समन्वय का मूल मंत्र छिपा है। उनके उपदेश उनकी शिक्षाऐं समाज को एकत्र करने का काम करती हैं। कबीर के उपदेश और उनकी वाणी में समाज का हित दृष्टिगोचर है।

कबीर दास जी क्रान्तिकारी विचारों के कवि थे। समाज में व्याप्त अंधविश्वास, हिंसा पाखंड वर्ग भेद, साम्प्रदायिकता, अन्तर्विरोध और रूढ़ियों से जर्जर हो चली सामाजिक व्यवस्था को बदलना ही उनका प्रमुख लक्ष्य था। कबीर दास जी स्वभाव से शान्तिमय जीवन प्रिय थे, वे अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे। अपनी सरलता, साधुस्वभाव तथा संत प्रवृत्ति के कारण, केवल भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विदेशों में भी उनका समादर होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:- Online link


1. https: // ignca .gov.in
2. https: // manavahitayekandolan. Word press. Com
3. ignited mind journals
4. Same
5. www. hindwi.Org
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
7. कबीर ग्रन्थावली, माता प्रसाद
8. https: // brainly. In
9. https: //kabir-k - done.blogspot .com
10. https: // satyaloy.word press.com
11. https: // testbook .com
12. https: // testbook .com